वह लिए-लिए फिरता है गली-गली बच्चों में बेचने के लिए मामूली चीज़ दो रूपये का, पांच रूपये का, कि बच्चे ख़रीद लेंगे। वह इन गुब्बारों को लिए-लिए फिर रहा है। इसे यक़ीन है, कि मेरी यह चीज़ मामूली नहीं है, कोई बच्चा हाथ लगाएगा तो गुस्सा आएगा और कोई गुब्बारा फूट जाएगा तो अपना नुक़सान समझेगा क्योंकि इससे अपने मसाइल का हल होने का यक़ीन है। हज़रत रह० फ़रमाते थे, कि नमाज़ को बिगाड़ने की वजह यह है कि सारी शक्लों से मसाइलों के हल होने का यक़ीन है, पर नमाज़ से मसाइल के हल होने का कोई यक़ीन नहीं है।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! नमाज़ को इस यक़ीन पर लाओ, कि नमाज़ के साथ जो वायदे अल्लाह ने लगाएं हैं। इन वायदों का यक़ीन पैदा करने के लिए तालीम है कि ख़ूब समझ लो, कि तालीम का क्या मक़सद है?। तालीम का मक़सद है आमाल में एहतिसाब पैदा करना, कि अल्लाह तआला मुझे इस अमल पर क्या देने वाले हैं। यह फ़ज़ाइल ही अल्लाह के वायदे हैं, कि तालीम का मक़सद आमाल के अंदर एहतिसाब पैदा करना है। अल्लाह तआला इस अमल पर क्या देने वाले हैं। एक-एक अमल को वायदों के यक़ीन पर लाने के लिए तालीम है। यह तालीम का मक़सद है, कि आमाल अल्लाह के वायदों के यक़ीन पर आए।

तालीम कराने का तरीक़ा

अब तालीम का तरीक़ा क्या है?

तालीम का तरीक़ा यह है कि "फ़ज़ाइले आमाल" "मुन्तख़ब अहादीस" इन दोनों किताबों से बराबर तालीम होगी और जिस मस्जिद में दो वक़्त तालीम होती हो, तो वहां एक वक़्त फ़ज़ाइले आमाल और एक वक़्त मुन्तख़ब अहादीस की तालीम हो। दूसरे सूबों से आए हुए लोग भी इस बात को नोट कर लें। जिस मस्जिद में मस्जिद की जमाअत बनी हुई है और कम से कम आठ साथी मस्जिद की जमाअत में हैं, तो मैं शुरू में अर्ज़ कर चुका, कि मस्जिद की जमाअत मुलाक़ातें करके लोगों को मस्जिद में लाएं।

अल्लाह के रास्ते में निकलकर दो वक़्त तालीम होगी, शुबह और शाम। एक वक़्त फ़ज़ाइले आमाल एक वक़्त मुन्तख़ब अहादीस, दोनों किताबों से अल्लाह के

रास्ते में निकलकर तालीम का एहतिमाम किया जाए। एक किताब में से सुबह पढ़ लिया जाए, एक किताब में से शाम को पढ़ लिया जाए। एक–एक हदीस को पढ़ने वाला तीन–तीन बार पढ़ें, यह तालीम का मसनून तरीक़ा है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब कोई बात फ़रमाते थे, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस बात को तीन बार दोहराते थे, ताकि बात अच्छी तरह समझ में आ जाए। इसलिए याद रखें! कि तालीम में एक–एक हदीस को तीन–तीन बार पढ़ लिया जाए और तालीम के दौरान मज्मे की तरफ़ देखते रहो, तालीम में ब–वुज़ू बैठने की कोशिश करो, तालीम में ऐसे बैठो, जैसे नमाज़ में, 'अत्तहियात' में बैठते हो, क्योंकि जितना अदब होगा, उतना ही हदीस का नूर आएगा। हदीस के नूर से ही अमल के करने की इस्तिदाद पैदा होगी।

तालीम में बैठने का तरीक़ा

ब–वुज़ू बैठो!
टेक न लगाओ!
मुवाज्जोह होकर बैठो!
आपस में बातें न करो!

इस तरह, अगर हम तालीम का अमल करेंगे, तो यह तालीम का अमल, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद का अमल है। इससे हमारे अंदर वही अमल की रग़बत और शौक पैदा होगा, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वायदे सुनाने से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० के दिलों में पैदा होता था। सिर्फ़ इतनी बात है, कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मौजूद नहीं हैं। वरना–

वही हल्क़ा है,
वही उम्मत है,
वही हदीसें हैं,
वही अल्लाह के वायदे हैं,

जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को सुनाया करते थे। इस तरह हमें जमकर तालीम के हल्क़ों में बैठना

है। सुबह–शाम ढाई घंटे, तीन घंटे जमकर तालीम होगी। लोग पूछते हैं तालीम कितनी देर हो? हज़रत रह० फ़रमाते थे कि मक़ाम पर भी तालीम कम से कम डेढ़ घंटे होनी चाहिए। हमारी मस्जिद की तालीम का हाल यह है, कि पांच मिनट और दस मिनट तालीम हो जाती है। देखो! मैं इसकी आसान शक्ल व तर्तीब बताता हूं, कि तालीम कराने वाला तालीम कराए, अगर लोग कुछ देर के बाद उठकर जाना चाहें, तो तालीम करने वाला यह कह दे कि आप अगर जाना चाहें तो जा सकते हैं, तालीम का अमल तो जारी रहेगा। यह कहकर तालीम शुरू कर दे। इतना सब तैय कर लो, तो इनशाअल्लाह कम से कम हर मस्जिद में आधा घंटा तालीम का अमल यक़ीनन होगा। एक दिन "फ़ज़ाइले आमाल" एक दिन "मुन्तख़ब अहादीस" अगर एक वक़्त तालीम होती है।

अगर दो वक़्त तालीम होती है, तो एक वक़्त "फ़ज़ाइले आमाल" और एक वक़्त "मुन्तख़ब अहादीस" की तालीम होगी। तालीम के साथ तालीमी गश्त भी होगा। जिस मस्जिद में दावत, तालीम और इस्तिक़बाल का अमल है, वहां मुलाक़ातें करके मस्जिद के माहौल में लोगों को लाओ। तालीम में जो जमाअत अल्लाह के रास्ते में निकल रही है, वह जमाअत में निकलकर भी तालीमी गश्त करें।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु जो सारे मुहद्दिसीन के इमाम हैं, वह मदीना के बाज़ार में गश्त कर रहे थे, लोगों को तालीम के हल्क़े में जोड़ने के लिए। इस तरह मेरे बुज़ुर्गों दोस्तों और अज़ीज़ो! हमें भी मुलाक़ातों के ज़रिए लोगों को तालीम के हल्क़ों में लाना है। बाज़ार में लोगों को एक–एक को जाकर दावत दो कि मस्जिद में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसें सुनाई जा रही हैं, अल्लाह के वायदे सुनाए जा रहे हैं, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मीरास तक़सीम हो रही है। यानी इल्म सिखलाया जा रहा है। आप भी तशरीफ़ ले चलें। इस तरह मुलाक़ातें करके लोगों को मस्जिद के माहौल में ले आओ, चाहे आप अपने मक़ाम पर हो या अल्लाह के रास्ते में हों। हमें हर जगह तालीम का हल्क़ा क़ायम करना है। और इसके लिए तालीमी गश्त करना है, चाहे अपने मक़ाम पर हों, अल्लाह के रास्ते में निकलकर हो, हर जगह तालीमी गश्त के ज़रिए लोगों को मुलाक़ात करके मस्जिद लाना है। यह है तालीम के साथ मेहनत

और यह है तालीम का तरीक़ा।

इसी तरह मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! मैंने अर्ज़ किया है कि तालीम के दौरान एक-एक हदीस को तीन-तीन बार पढ़ो, अगर पढ़ने वाला आलीम है, मौलवी है, अरबी अबारात (जुम्ले) पढ़ सकता है, तो ज़रूर एक दो हदीस अरबी अबारात (जुम्ले) की पढ़ लिया करे। जिससे सीधे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ुबान मुबारक से निकले हुए अल्फ़ाज़ कानों में पड़ें। इनकी रूहानियत अलग ही है। वह रूहानियत तर्जुमा करके ज़बान में नहीं आ सकती, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान मुबारक से निकले हुए अलफ़ाज़ में है। इसलिए ऐसा शख़्स जो आलिम हो, अरबी अबारात (जुम्ले) पढ़ सकता हो, इसको चाहिए कि वह हदीस की अबारात (जुम्ले) अरबी में एक मर्तबा पढ़ लिया करे। जो उर्दू का तर्जुमा है इसको तीन मर्तबा पढ़े। इसकी कोशिश न करो, कि किताब ख़त्म हो जाए, इसकी कोशिश करो, जो बात कही जा रही है हदीस की वे लोगों के दिलों में उतर जाए। तालीम के दौरान मुतावज्जोह करते रहो और पूछते रहो, मज्मे से कहो, भाई! बात समझ में आ रही है? देखो! नमाज़ छोड़ने पर कितना बड़ा अज़ाब है, भाई आपको बात समझ में आ रही है, देखो नमाज़ पर कितना बड़ा वायदा है, इसी तरह तालीम के दौरान मज्मे से पूछते रहो, मुतावज्जोह करते रहो, इसी तरह हमें इनशाअल्लाह तालीम के ज़रिए अल्लाह के वायदों का यक़ीन सीखना है।

एक फ़ज़ाइल का इल्म है और एक मसाइल का इल्म है, मसाइल का इल्म उलमा से हासिल करो। जहां जाओ, वहां भी अपने मक़ाम पर रहते हुए भी उलमा की ज़ियारत को इबादत यक़ीन करो। हर-हर क़दम पर मसाइल उलमा से पूछो। हज़रत रह० फ़रमाते थे, कि उलमा से पूछकर चलना, यह इसके ईमान की दलील है, वरना जिसके पास ईमान न होगा, इसको इल्म से कोई रग़बत नहीं होगी। जी हां! हदीस में इल्म और ईमान को साथ जोड़ा गया है। एक हदीस में आता है, कि जो इल्म और ईमान चाहेगा, अल्लाह तआला उसको दीन देंगे। ईमान की अलामत है, उलमा से मुहब्बत और उलमा की सोहबत से इल्म का हासिल करना।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! उलमा से पूछ-पूछकर चलो, हज़रत फ़रमाते थे कि उलमा की ज़ियारत को इबादत यक़ीन करो। अपने बच्चों

को इल्मे इलाही पढ़ाओ। आप सारी मेहनत और कोशिश बच्चों को अंग्रेज़ी पढ़ाने पर है। देखो! इसका ताल्लुक़ एक ज़रूरत से है। हम इससे इंकार नहीं करते, पर यह ज़रूरत है, मक़सद नहीं है। जो इल्म, मक़सूद है, वह इल्मे इलाही है।

सबसे बड़ी जिहालत, हर चीज़ को इल्म समझ लेना

मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! इस ज़माने की सबसे बड़ी जिहालत यह है, कि लोगों ने हर चीज़ को इल्म समझ लिया है। कि लोगों से पूछो कि क्या पढ़ रहे हो? जी,

साइंस का इल्म,
अंग्रेज़ी का इल्म,
डाक्टरी का इल्म,
इंजिनिरिंग का इल्म,

तौबा...तौबा....कितनी बड़ी जिहालत है, हर चीज़ को इल्म क़रार देना, कितनी बड़ी जिहालत है। आज सारी दुनिया के पढ़े लिखे मुसलमान भी इस फ़िल्ने में मुब्तला हो गए हैं कि इन्होंने हर चीज़ को इल्म क़रार दे दिया। नहीं मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! आज दिल की गहराइयों से इस बात को निकाल दो, कि हर चीज़ इल्म है। "इल्म" सिर्फ़ वह है, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर अल्लाह हम से चाहते हैं, वरना अब यह ज़ेहन बन गया है, कि हर चीज़ सीखना इल्म है, बिल्कुल यह बात नहीं है। इल्म सिर्फ़ वह है, जो हम से हमारा रब, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर चाहता है।

मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! असल में ख़ालिक़ की तहक़ीक़ करना "इल्म" है और मख़्लूक़ की तहक़ीक़ करना "फ़न" है। क़ब्र में जाते ही जब सवाल होगा "मन रब्बुका" तो जो रब से पलने का यक़ीन ले गया है, वह कहेगा "रब्बीयल लाहू" की मेरा रब अल्लाह है यहां से कामयाबी के दरवाज़े खुल जाएंगे। इसलिए ख़ूब समझ लो! कि हर चीज़ को इल्म क़रार देना, ज़माने की सबसे बड़ी जिहालत है इल्म सिर्फ़ वह जो हमसे हमारा रब चाहता है। इंतिहाई नादान और इंतिहाई न-समझ है वे लोग जो ये समझते हैं कि दुनिया में हर सीखे जाने वाली चीज़ इल्म है, और इससे बड़ी हिमाक़त यह करते हैं, कि वह हदीस को जो इल्म से ताल्लुक़ रखती है, इन हदीसों को ये लोग ईमान वालों के अंदर दुनिया की अहमियत और दुनिया की रग़बत पैदा कराने के लिए

दुन्यावी फन (इल्म) के लिए इस्तेमाल करते हैं। मेरी बात बहुत ध्यान से सुननी पड़ेगी, कि वे हदीसें, जिनमें इल्मे इलाही के सीखने का हुक्म दिया गया है, इन हदीसों को दुन्यावी इल्म को सीखने के लिए इस्तेमाल करते हैं, यह शैतान का सबसे बड़ा धोखा है। यह उस वक़्त खुलेगा जब क़ब्र में जाकर सवाल होगा, सारे फन (इल्म) एक तरफ़ होंगे, वहां इल्म के बारे में सवाल होगा कि बताओ किससे पलने का यक़ीन लाए हो।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! आज की मज्लिस में यह फ़ैसला कर लो कि इल्म किसे कहते हैं। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहां से जो शरीअत का इल्म लेकर आए हैं। सिर्फ़ उसे ही इल्म कहते हैं, उस शरीअत के इल्म पर अमल करना, उसको हासिल करना, यही इल्म है। कुरआन, हदीस, कि सिवा जो कुछ है वह सब दुनिया के फन (इल्म) हैं। याद रखो! अब रही बात यह कि जिसका ताल्लुक़ ज़रूरत से है, हम उससे नहीं रोकते, सीखो। लेकिन उसको इल्म समझना और उस पर सलाहियतों का खपाना और इतना ही नहीं उस पर अज्र की उम्मीद करना यह धोखा है। मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! अगर ज़रा सी अक़्ल का इस्तेमाल करो, तो यह बात समझ में आ सकती है, कि इल्म किसे कहते हैं। "इल्म" कहते हैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह की तरफ़ से जो कामयाबी का तरीक़ा लेकर आए हैं। उस तरीक़े की तहक़ीक़ करना, उसको इल्म कहते हैं इसलिए सारा इल्म क़ब्र के तीन सवालों में महदूद है।

रब को जानना यानी ईमान।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े को जानना यानी शरीअत को जानना।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जानना यानी सुन्नत को जानना।

इन तीनों चीज़ों की तहक़ीक़ करना, ही इल्म है, इसके अलावा जो इल्म है वह जिहालत है, इसलिए यह सारे इल्म का ख़ुलासा, क़ब्र के तीन सवाल है। क़ब्र में यह कोई सवाल नहीं होगा, कि–

आपने डाक्टरी कितनी पढ़ी है?

साइंस कहां तक पढ़ी है?

इंजिनियारिंग में क्या पास किया है?

कब्र में इनसे मुताल्लिक़ कोई सवाल नहीं होगा।

मेरे बुजुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! हज़रत उमर रज़ि० एक दिन तौरात की कुछ बातें सीखकर आए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं तौरात का इल्म सीखकर आया हूं, ताकि मेरे इल्म में और इज़ाफ़ा हो, यह सुनकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत उमर रज़ि० पर इतना गुस्सा आया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिम्बर पर बैठ गए और सारे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु जमा हो गए, अंसार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुस्से को देखकर तलवारें लेकर आ गए, कि किसने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सताया है? सारा गुस्सा था हज़रत उमर रज़ि० पर कि हज़रत उमर रज़ि० ने तौरात का इल्म क्यों पढ़ा है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उमर (रज़ि०) कि मूसा अलै० आज ज़िंदा होकर आ जाएं तो उनके लिए भी निजात का कोई रास्ता नहीं है सिवाए मेरे तरीक़े के और अगर तुमने मूसा अलै० के तरीक़े पर अमल किया, तो तुम गुमराह हो जाओगे, हिदायत नहीं पाओगे।

क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने पर सारे नबियों के आने का दरवाज़ा बंद कर दिया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत ने सारी शरीअतों को ऐसा मंसूख कर दिया, जिस तरह हर ज़माने में बच्चा बड़ा होता रहता है और इसके पिछले कपड़े बेकार और नाकारा होते रहते हैं। अगर वह इन कपड़ों को इस्तेमाल करेगा तो,

तंगी में पड़ेगा,

कपड़े फटेंगे,

जिस्म पर सही नहीं आएंगे,

यहां तक कि इंसान अपनी क़द व क़ामत से एक ऐसी उम्र में पहुंच जाता है, कि अब मरने तक उसके लिए यह लिबास तैय हो जाता है इसी तरह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत ने पिछली सारी शरीअतों को और सारे तरीक़ों को ऐसा ख़त्म कर दिया। जैसे बड़े हो जाने वाले नवजवान के लिए पिछले सारे बचपन के कपड़े बेकार हो जाते हैं इस बात को आप सामने रखकर सोचें और

अंदाज़ा करें कि जो चीज़ इल्म थी और मूसा अलै० की नुबूवत पर नाज़िल की गई थी इसको हज़रत उमर रज़ि० जैसे आलिम ने सीखा, जो सारे इल्मों के माहिर और इतना ही नहीं बल्कि इस उम्मत के मरहम जिसको अल्लाह की तरफ़ से सही बात हज़रत उमर रज़ि० को इल्हाम की जाती थी ग़ौर करो इस पर कि जो इस उम्मत का मरहम था, जिसको अल्लाह की तरफ़ से सही बात इल्हाम की जाती थी, वह हज़रत उमर रज़ि० जिनके बारे में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : अगर मेरे बाद कोई नबी हो सकते थे, तो हज़रत उमर रज़ि० हो सकते थे। इस दर्जा का आदमी, कि सारा कुरआन व हदीस का इल्म हासिल करने के बाद, उन्होंने हज़रत मूसा अलै० पर नाज़िल होने वाला इल्म हासिल किया, उस पर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इतना गुस्सा आया, कि जो चीज़ सिरे से इल्म ही नहीं है। इसको सीखना और अल्लाह के इल्म से जाहिल रहना। इस पर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़ियामत के दिन कितना गुस्सा आएगा। इस बात को ज़रा सा तंहाई (अकेले) में बैठकर ग़ौर करना! सर पकड़कर सोचना! कि जब हज़रत उमर रज़ि० जैसे आलिम को तौरात पढ़ने का जो इल्म था उस पर अल्लाह के नबी को कितना गुस्सा और हम इल्मे दीन से जाहिल रहकर दुन्यावी फ़न (इल्म) को सीखे और उसको इल्म समझें, ऐसे लोगों पर क़ियामत में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कितना गुस्सा आएगा?

इसलिए आप हज़रात से मेरी यह दरख़्वास्त है, कि अपने बच्चों को आप बेशक दुन्यावी किसी लाइन का फ़न (इल्म) सीखलाते हैं। लेकिन अपने बच्चों को कुरआन और दीन के बुनियादी अहकामात सीख लाने का पूरा-पूरा एहतिमाम करें। वरना ख़ुदा की क़सम! क़ियामत के दिन कोई शख़्स जाहिल होने की वजह से बख़्शा नहीं जाएगा, कि ऐ अल्लाह! मुझे ख़बर नहीं थी। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, कि हमने तुम्हें उम्र दी थी सीखने के लिए और नबी भेजे थे, सिखलाने के लिए, तो उसका कोई उज़्र अल्लाह के यहां क़बूल नहीं होगा। तुम्हारे पास बतलाने वाले भी आए और तुम्हें हमने उम्र भी दी सीखने के लिए।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! कोई मस्जिद ऐसी बाक़ी नहीं छोड़नी है जिसमें सुबह या शाम किसी भी वक़्त कुरआन के मक्तब में मुहल्ले

के बच्चों को कुरआन सीखाने का एहतिमाम न किया जा रहा हो, हर मस्जिद में कुरआन की तालीम और दीन की बुनियादी चीज़ों को सीखलाने का एहतिमाम हर मुहल्ले वालों का काम है। यह हर मस्जिद के मुसल्ली की ज़िम्मेदारी है। लोग कहते हैं कि सर्दी आ गई है हमारी मस्जिद में गर्म पानी का इंतिज़ाम होना चाहिए कि गर्मी आ गई है पंखे का इंतिज़ाम होना चाहिए और सफ़ों का इंतिज़ाम होना चाहिए। जब मस्जिद अपनी जिस्मानी ज़रूरतों के सामान से भर रही है, तो क्या जो मस्जिद के तक़ाज़े हैं, जो मस्जिद इबादत के लिए बनी है, क्या उसकी ज़िम्मेदारी नहीं है, कि यह अपनी ज़िम्मेदारी पर अपने ख़र्च पर मस्जिद के अंदर मक्तब का इंतिज़ाम कर लें? ये सारा मज्मूआ नीयत करके जाए कि अपनी मस्जिद में मक्तब का एहतिमाम करेंगे और अपने बच्चों को अगर यह सुबह दुन्यावी कोई फ़न (इल्म) हासिल करने के लिए जाते हैं तो अव्वल उससे इस्तिग़फ़ार भी किया करो, कि ऐ अल्लाह! तूने हमें किस लिए पैदा किया था और हम इन्हें क्या पढ़ा रहे हैं।

ऐ अल्लाह! तू हमें माफ़ कर दे, कि हमने इस इल्म से हटकर, इन चीज़ों को पढ़ाया, जिसके लिए तूने हमें पैदा नहीं किया था।

हाए! अल्लाह ने तो हमें अपनी इबादत के लिए पैदा किया था, तुम बताओ तो सही जब अल्लाह ने इबादत के लिए पैदा किया था, तो हमने इस इबादत के लिए अपने जिस्म को कितना इस्तेमाल किया?। बस मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! एक बात याद रखो, कि दुन्यावी क़ानून पर फ़ख़्र करना कुफ़्र का मिज़ाज है, अगर मुसलमान फ़ख़्र करे तो,

कुरआन पर करे,
हदीस पर करे,
फ़िक़्ह पर करे,

यह डाक्टर के मुक़ाबले में फ़ख़्र करेगा, कि मेरे पास अल्लाह का इल्म है, अगर तुमने ऐसा न किया, तो यह दुन्यावी फन (इल्म) हासिल करेगा और फ़ख़्र करेगा उलमा पर, कि मेरे पास फ़न (इल्म) है बस याद रखो! कि दुनिया का फ़न (इल्म) हासिल करके फ़ख़्र करना कुफ़्र का मिज़ाज है। अंबिया अलै० जब अल्लाह का इल्म लेकर आए, तो क़ौमों ने अपने फन (इल्म) के मुक़ाबले में नबियों के इल्म

का मज़ाक उड़ाया, तो अल्लाह ने नबियों के इल्म का मज़ाक़ उड़ाने की वजह से सबको हलाक कर दिया। बस आज से हम सब यह तैय कर लें कि इल्म सिर्फ़ वही है, जो हमारा रब चाहता है।

अपने बच्चों को कुरंआन पढ़ाइये और दीनी मदरसों में दाख़िला कराइये। मैं कैसे समझाऊं, कि आज मुसलमान को अल्लाह वाले इल्म से पलने का यक़ीन नहीं है, अल्लाह जो सबका रब है, जिसकी ज़ात से इल्म निकलता है, उससे पलने का यक़ीन नहीं है। आज ग़ैरों के फ़नों (इल्मों) से पलने का यक़ीन है। हदीस में आता है "कि जो कुरंआन को पढ़कर ग़नी (मालदार) न हो वे हम में से नहीं है कि कुरंआन तो यक़ीनन ग़नी कर देगा।

मेरे दोस्तों, बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! इल्म दो क़िस्म का है।

फ़ज़ाइल का और

मसाइल का,

फ़ज़ाइल का इल्म तालीम के हल्क़ों में बैठ-बैठकर हासिल किया जाएगा और मसाइल का इल्म उलमा से पूछो, क़दम क़दम पर पूछकर चलो, कि-

मैं शादी कैसे करूं?

मैं तिजारत कैसे करूं?

मैं फ़लां मुलाज़मत करता हूं, हलाल है या हराम?

जाइज़ है, या ना-जाइज़?

हराम गिज़ाओ (खाने-पीने) का असर

अगर ऐसा न करोगे, तो इतने रास्ते ग़ैरों ने हराम के खोल दिए हैं, कि वे किसी भी तरफ़ से मुसलमानों को हलाल खाने की फ़ुर्सत नहीं देना चाहते हैं। वे यह जानते हैं कि इनके खाने-पीने को हराम कर दो वरना इनकी बद-दुआ हमें हलाक़ कर देगी। हां, अगर उनका खाना-पीना हराम होगा, तो उनकी बद-दुआ हमारा कुछ नहीं बिगड़ सकेगी। अगर खाना-पानी और कमाई हराम रही, तो खुद उनको अपनी दुआ से कोई फ़ायदा नहीं होगा, तो हमारा क्या नुक़्सान कर सकते हैं। इसलिए कि तब उनको अपनी दुआओं से और बद-दुआओं से कोई उम्मीद बाक़ी नहीं रहेगी, क्योंकि हराम खाने वाले की दुआएं अल्लाह की तरफ़ से मरदूद

की जाती है।

इसलिए मेरे दोस्तों, बुजुर्गों और अज़ीज़ो! उलमा से मुहब्बत किया करो और उलमा की ज़ियारत को इबादत यक़ीन किया करो और क़दम–क़दम पर उनसे यह पूछना फ़र्ज़ और मोमिन का ज़िम्मा है, कि वह उलमा से पूछ–पूछकर चलें, कि उलमा से हर चीज़ पूछना ज़रूरी समझो इसकी कोशिश करो।

मौलाना इलयास साहब रह० फ़रमाते थे, "कि अल्लाह के ध्यान के बग़ैर, ज़िक्र करना बिदअत है"। बाज़ उलमा के नज़दीक़ अल्लाह के ध्यान के बग़ैर ज़िक्र करना हराम है। अल्लाह के ध्यान के बग़ैर ज़िक्र करना बदन में सुस्ती पैदा करता है और अल्लाह के ध्यान के बग़ैर ज़िक्र करना अल्लाह की तौहीन है। अब तो इधर सांथी हाथ में तसबीह लेकर बैठता है उसे नींद आने लगती है। हालांकि ज़िक्र, अंदर की गफ़लत को तोड़ने के लिए है। लेकिन देखने में यह आ रहा है कि गफ़लत के साथ अल्लाह का ज़िक्र कर रहा है। इसलिए हज़रत ईसा अले० फ़रमाते थे, कि जब ज़िक्र करो तो ज़बान को दिल के ताबेअ करो क्योंकि अल्लाह के ज़िक्र से अल्लाह का ध्यान पैदा करना मक़्सूद है।

मेरे दोस्तों, बुजुर्गों और अज़ीज़ो! ज़बान की हरकत से या तस्बीह के दानों का शुमार असल नहीं है। बल्कि असल ज़िक्र अल्लाह का ध्यान है, ज़बान तो दिल की तर्जुमा करने वाली है। देखो! कोई आदमी डाक्टर के पास गया, तो ज़बान से अपने हाल बयान करता है, यह ज़बान ही तर्जुमा करने वाली है, कि आपके अंदर क्या है? आप डाक्टर से अपने अंदर की बात ज़बान से कहते हैं। इसलिए दोस्तों और अज़ीज़ो! अल्लाह के ध्यान के साथ ज़िक्र करने की मश्क़ किया करो। ज़िक्र के लिए वुज़ू करो, लोग तो आपसे यह कहे, कि बग़ैर वुज़ू के भी ज़िक्र हो जाता है। नहीं मेरे दोस्तो! मैं जो कह रहा हूं उसे ध्यान से सुनो, कि मैं आपसे सारी की सारी हज़रत रह० की बातें नक़ल कर रहा हूं कि हज़रत फ़रमाते थे, ज़िक्र के लिए वुज़ू करो और तंहाई का कौना तलाश करो, अल्लाह का ज़िक्र तंहाई में करो कि अल्लाह का ज़िक्र अल्लाह के ग़ैर से कटकर होता है, कि अल्लाह के ग़ैर से कटकर अल्लाह के होकर अल्लाह को याद करो, तो तवस्सुल (अल्लाह से मिलना) उसी को कहते हैं। इसलिए तंहाई का कौना तलाश करो, एक तस्बीह तीसरे कलिमे

की, एक तस्बीह दुरूद शरीफ़ की, एक तस्बीह इस्तिग्फ़ार की एहतिमाम के साथ इन तीन तस्बीहात का सुबह व शाम अल्लाह के ध्यान के साथ करो।

अल्लाह का कुर्ब पाने का तेज़ रफ़्तार रास्ता

एक बात यह है, कि अल्लाह तौफ़िक़ दे तो सुबह सादिक़ से पहले कुरआन देखकर पढ़ लिया करो, चाहे तीन आयतें ही क्यों न पढ़ो। मौलाना इल्यास साहब रह० फ़रमाते थे कि मैंने सारे बुज़ुर्गों को और औराद व वज़ाइफ़ करते हुए देखा, मगर जितना तेज़ रफ़्तार से अल्लाह का कुर्ब सुबह सादिक़ से पहले कुरआन देखकर पढ़ने का महसूस किया इतना किसी वज़ीफ़े में और किसी विर्द में और किसी अमल में नहीं किया। अब तो लोगों की यह आदत है, कि वे चाहते हैं कि लम्बे-लम्बे ज़िक्र करें, हालांकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख़्तसर और मुतादिल (दर्मियानी, आसान) अज़्कार अपनी उम्मत को फ़रमाए है। देखो भाई! सुन्नत में जो एतिदाल है, वह सुन्नत की वजह से है, बाज़ हमारे साथी जमाअतों में निकलते हैं, वे बीमार होकर आते हैं, होता यह है, कि कोई हफ़्तों सोता नहीं है और पागलपने की बातें करता है, दिमाग़ में खुश्की हो गई कि अल्लाह के रास्ते से बड़े-बड़े बीमार होकर आते हैं। लोग पूछते हैं, कि क्या पढ़ा? तो पता यह चलता है, कि जमाअतों में निकलकर किसी किताब में से किसी बुज़ुर्ग का वज़ीफ़ा पढ़ लिया, या किसी से किसी बुज़ुर्ग का वज़ीफ़ा सुन लिया और खुद से पढ़ने लगें। मेरे दोस्तो! यह हैरत की बात है, कि सुन्नत के अमल में इसको वह बुज़ुर्गी नज़र नहीं आती जो एक बुज़ुर्ग की नक़ल उतारने में आती है। कोई कहता है, मैंने इतना कलिमा पढ़ लिया और कोई कहता है कि मैंने इतना कलिमा पढ़ लिया और कोई कहेगा, फ़लां वज़ीफ़े में इतना पढ़ लिया, आम आदत है हमारे साथियों की क्या वे यह समझते हैं, कि अज़्कार मसनूना आम चीज़ है। हालांकि जो चीज़, जो ज़िक्र, जो विर्द, जो अमल, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित है, उसके अलावा कुछ और तुम सारी ज़िंदगी भी अगर ज़िक्र करते रहो, तो न वह अनवारात न और न वह अज्र हासिल कर सकते हो, जो अज्र और जो अनवारात सुन्नत की इक़्तदा में हासिल होगा। एक मर्तबा कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपस में बात की, कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अगले-पिछले सारे

गुनाह माफ़ हो चुके हैं और अल्लाह के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पसंदीदा हैं। अल्लाह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यूं ही नवाज़ देंगे। पर हम तो कुफ़्र से इस्लाम में आए हैं, हमारे लिए तो यह आमाल बहुत ही थोड़े हैं, चुनांचे सब ने बैठकर यह तैय किया,

एक ने कहा, मैं तो हमेशा रोज़ा रखूंगा, इफ़्तार नहीं करूंगा।

एक ने कहा, मैं तो रात को जागूंगा, और कभी नहीं सोऊंगा।

एक ने यह तै किया, कि मैं शादी नहीं करूंगा।

ताकि इबादत के लिए फ़ारिग़ रहूं, न बीवी हो न बच्चे हों, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब उनके इस इरादे का इल्म हुआ, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस बात पर बहुत ज़्यादा गुस्सा आया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सबको जमा किया और उन्हें ख़ास तौर पर बुलाया, जिन सहाबा ने यह फ़ैसला किया था, कि मैं रोज़ा रखूं हमेशा और मैं जागूंगा हमेशा और मैं शादी नहीं करूंगा, उनको जमा किया और जमा करके फ़रमाया,

"مَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِيْ فَلَيْسَ مِنِّيْ"

"जो मेरे तरीक़े से फिरेगा, वह मेरी जमाअत में नहीं है"। लोग इस हदीस को पढ़ते हैं और अक्सर को यह मालूम नहीं है कि—

مَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِيْ فَلَيْسَ مِنِّيْ

यह बात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कब फ़रमाई थी? यह बात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस वक़्त फ़रमाई थी, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ि० को एतिदाल से और सुन्नत तरीक़े से हटता हुआ पाया था, क्योंकि उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मामलात को कम समझा और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बढ़कर अमल करने का इरादा किया। मेरी बात समझ में आ रही है आप लोगों को क्यों भाई! इसलिए मैं अर्ज़ कर रहा हूं, कि सब के सब मसनून दुआओं का एहतिमाम किया करो! मसनून दुआ की किताब ले लो! सब मसनून दुआ ही पढ़ा करो उन्हें याद किया करो उन्हीं को मांगा करो।

हज़रत रह० फ़रमाते थे कि मसनून दुआओं में क़ुबूलियत के रास्ते देखे गए हैं

बस मुझे मुख़्तसर अर्ज़ करना है, कि आप हज़रात उन अज़्कार का एहतिमाम किया करो, जो अज़्कार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित है उसमें एतिदाल। एक मर्तबा हज़रत जुवैरिया रज़ि० यह बहुत सारी गुठलियां जमा किए हुए पढ़ रहीं थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर में दाख़िल हुए। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा कि वह गुठलियां पढ़ रही हैं और गुठलियों का ढेर लगा हुआ था आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा कि क्या कर रही हो? कहा, अल्लाह का ज़िक्र कर रही हूं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : कि मैंने यहां तेरे पास आकर खड़े होते ही ज़बान से ऐसे कलिमात कहे हैं अगर उन कलिमात का वज़न किया जाए, तो यह सारी गुठलियां ज़बान से जिन्हें तुम पढ़ी जा रही हो, उसके मुक़ाबले में जो मैंने पढ़ा, कोई वज़न नहीं है। जी हां, अज़्कारे मसनूना, अपने अंदर अल्लाह के सारे फ़ायदे लिए हुए हैं।

इसलिए मेरे दोस्तों, बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! ज़रा अपने आप पर रहम करो, कि नुबूवत की इक़्तिदा, एतिदाल का रास्ता है यह नहीं कि मैं भी वह कर रहा हूं, जो फ़लां बुज़ुर्ग ने किया, मैं भी वह पढ़ रहा हूं जो फ़लां बुज़ुर्ग ने पढ़ा। मेरे दोस्तो! ज़िक्र में भी अल्लाह के नबी की इक़्तिदा करो, एक मज्लिस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 100 मर्तबा इस्तिग़फ़ार किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ि० से फ़रमाया : कि तुम लोग भी इस्तिग़फ़ार करो, कि अज़्कारे मसनूना के अंदर एतिदाल है। हमारे साथी इसका एहतिमाम नहीं करते और यह चाहते कि मुझे कोई वज़ीफ़ा मिल जाए। हां, मुख़्तसर सा वज़ीफ़ा सुन्नत का वज़ीफ़ा है। इस तरह हमें अल्लाह के रास्ते में निकलकर ज़िक्र का एहतिमाम करना है ब-वुज़ू होकर, अल्लाह के ध्यान के साथ, अल्लाह का ज़िक्र करना है।

मेरे बुज़ुर्गों, अज़ीज़ों और दोस्तो! अगर दुआओं के ज़रिए अल्लाह की ज़ात से ताल्लुक़ पैदा हो गया तो यक़ीनी बात है, कि अल्लाह हमारे और बंदों के दर्मियान के हालात को ठीक कर देंगे। जो अपने और अल्लाह के दर्मियान के मामलात को ठीक कर लेगा, तो अल्लाह उसके और बंदे के दर्मियान के मामलात को ठीक कर देंगे। अल्लाह से मामलात ठीक करना यह है, कि दुआओं के रास्तों से अपने मसाइल को अल्लाह से हल कराया जा रहा हो। इसलिए कि जो शख़्स अल्लाह

से अपने मसाइल का हल न करा पाएगा, वह बंदों के हक़ मारेगा, उनके हक़ूक़ दबाएगा, इसलिए बंदों के हक़ूक़ वह मारता है जो अल्लाह के हक़ूक़ ख़ूब मार रहा हो और दुआ अल्लाह का हक़ है। जिसको अल्लाह के हक़ की परवाह नहीं है वह बंदों के हक़ूक़ की परवाह क्या करेगा, इसके लिए इकरामे मुस्लिम है, कि अल्लाह के रास्ते में निकलकर हमें इकराम की मश्क़ करनी है। अपने अंदर इकराम की सिफ़त पैदा करने के लिए इकराम की मश्क़ ख़िदमत से होती है, कि अल्लाह के रास्ते में निकलकर ख़िदमत करना, अपनी तर्बीयत के लिए है। ख़िदमत के लिए हर एक मुहताज होगा, जिस तरह तर्बीयत का हर एक मुहताज है, अल्लाह के रास्ते में निकलकर ख़िदमत में अपने आपको ख़ुद पेश करो, कि

लाओ खाना मैं बनाऊंगा,
लाओ लकड़ी मैं जलाऊंगा,
जंगल से लकड़ियां चुनकर मैं लाऊंगा।

जब अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जंगल से लकड़ियां चुनकर ला सकते हैं, तो मेरी और आपकी क्या हैसियत है। एक मर्तबा ये सारे काम सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु पर बांट दिए गए, कि

बकरी कौन काटेगा,
गोश्त कौन बनाएगा,
खाना कौन पकाएगा,

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : कि मैं क्या करूंगा? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि आप तो अल्लाह के नबी हैं, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : कि मैं जंगल से लकड़ी चुनकर लाऊंगा, तो फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद तशरीफ़ ले गए और जंगल से लकड़ियां चुनकर उठा लाए। ख़िदमत में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा रज़ि० के साथ इस तरह लगे रहते थे, कि बाहर से नए आने वालों को पूछना पड़ता था,

"أيكم محمد!"

कि तुममें से "मुहम्मद" कौन हैं? बाहर से आने वाला पूछता था, कि तुममें "मुहम्मद" कौन है? कोई इम्तियाज़ी (अलग) शान नहीं थी कि अमीर साहब है।

अमीर साहब सबसे आगे ख़िदमत में लगे हुए हैं।

इसलिए मेरे दोस्तो! ख़िदमत में लगना अपनी तर्बीयत के लिए है, वरना यह तो मुम्किन ही नहीं है, इंसान हो और ख़िदमत करने से उसकी तर्बीयत न हो? और ईमान वाला हो और उसके अंदर तवाज़ोह न हो। इसलिए हमें अल्लाह के रास्ते में निकलकर ख़ूब मश्क़ करनी है। ख़िदमत के ज़रिए अपने अंदर तवाज़ोह पैदा करने के लिए ख़िदमत में ख़ूब लगो और देखो। ये सारे काम, अल्लाह की रज़ा के लिए हो। उसके अलावा हमारी कोई ग़रज़ न हो, यह सब काम अल्लाह के लिए हो, क्योंकि हदीस में आता हैं, कि थोड़ी सी रिया (कोई अमल अल्लाह के अलावा दूसरों के लिए करना) भी शिर्क है। अल्लाह के ग़ैर का थोड़ा सा ख़्याल भी शिर्क है। ये सब काम महज़ अल्लाह की रज़ा के लिए हो इसके अलावा हमारी कोई ग़रज़ न हो। एक सहाबी रज़ि० ने आकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! एक आदमी नेक अमल करता है और उसका दिल यह चाहता है कि उसके अमल को कोई देख ले, आप उसके बारे में क्या फ़रमाते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : उसको कुछ नहीं मिलेगा। जी हां ! एक सहाबी ने आकर अर्ज़ किया, कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक आदमी कोई नेक अमल करता है और यह बात उसे ख़ुश करती है कि उसके अमल को कोई देख ले, आप उसके बारे में क्या फ़रमाते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ामोश रहे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अल्लाह की तरफ़ से आयत नाज़िल हुई, कि जो शख़्स अपने अमल के ज़रिए अल्लाह से मिलना चाहता हो, उसको चाहिए कि अपने अमल को अल्लाह के लिए ख़ालिस कर ले, अल्लाह की इबादत में दूसरों को शरीक न करे, कि अल्लाह की इबादत का शिर्क यह है, कि बंदा अपने अमल से अल्लाह के ग़ैर को ख़ुश करना चाहे।

देखो मेरे दोस्तो! यह बहुत अहम मसअला है, यहां से आप जमाअत में निकलेंगे, तो वहां जब आप तहज्जुद पढ़ रहे होंगे, तो दिल में ख़्याल पैदा होगा कि काश अमीर साहब देख लेते, कि सब सो रहे हैं और मैं तहज्जुद पढ़ रहा हूं। गश्त में अल्लाह आपसे अच्छी बात करवा देगा, तो मस्जिद में आते ही अंदर जज़्बा यह होगा, कि काश!......मेरे साथियों में से कोई मेरी बात अमीर साहब को बता दे,

कि अमीर साहब! उसने गश्त में बहुत अच्छी बात की है। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि यह नीरा शिर्क है, नीरा शिर्क (खुला हुआ शिर्क) है कि दुनिया में तो अल्लाह उसको उम्दा जगह देंगे और आख़िरत में उसको कोई हिस्सा नहीं होगा, हां यह अंदर का जज़्बा होता है, कि शैतान अंदर यह ख़्याल पैदा करेगा, कि तुमने गश्त में बात बहुत अच्छी की थी, अगर अमीर साहब को मालूम हो जाएगा, तो फिर अमीर साहब तुमसे बात करवाएंगे, ऐसे आदमी के साथ अल्लाह की कोई मदद नहीं होगी।

मेरे दोस्तों, बुजुर्गों और अज़ीज़ो! जिस तरह हमें बुतों की शिर्क से हमें पनाह मांगनी है उसी तरह अमल के शिर्क से भी अल्लाह की पनाह मांगनी है। क्योंकि एक बुतों का शिर्क है और एक अमल का शिर्क है, बुतों का शिर्क यह है कि अल्लाह के गै़र की इबादत की जाए और अमल का शिर्क यह है, कि अमल को अल्लाह के ग़ैर के लिए किया जाए, ये दोनों शिर्क, जहन्नुम में ले जाएंगे। इसलिए अल्लाह से रो रोकर इख़्लास मांगो कि ऐ अल्लाह! तू हमारे अमल में इख़्लास पैदा फ़रमा दे, हमारे अमल को तो तू ही अपनी ज़ात के लिए ख़ालिस कर दे, वरना शैतान क़दम क़दम पर नीयत के अंदर फ़तूर पैदा करेगा और नीयत को बिगाड़ने की कोशिश करेगा, उसी तरह हमें अल्लाह के रास्ते में निकलकर इन छः सिफ़ात की मश्क़ करनी है। हमारा निकलना इसलिए हो रहा है ताकि यह बातें अपनी हक़ीक़त के साथ दिलों में उतार जाए, तो पूरे दिन पर चलने की इस्तिदाद यक़ीनन पैदा हो जाएगी।

इसलिए मेरे दोस्तों और अज़ीज़ो! पहली बात यह है निकलने में, कि हमारे दिलों में इस काम की अज़मत हो, इस काम की अज़मत और इस रास्ते में निकलने का एहतिमाम सहाबा रज़ि० के दिलों में था। क्योंकि उसमें कोई शक नहीं कि काम वही है, जो सहाबा किराम रज़ि० का था अल्लाह के रास्ते में निकलते हुए हमारे वह जज़्बात हो, जो जज़्बात सहाबा किराम रज़ि० के थे इस बात को दिल से यक़ीन करो कि अल्लाह के रास्ते कि एक सुबह और एक शाम दुनिया में और दुनिया में जो कुछ है उस सबसे बेहतर है, हमारा अगर ख़्याल यह है कि करने के काम और भी हैं ख़ैर के, क्या ज़रूरी है कि तब्लीग़ में निकल जाएं तो हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० जब आदमी जमाअत से पीछे रह गए, तो क्यों पीछे रह गए,

दुकान के लिए?

भाई की शादी के लिए?

कारोबार के लिए?

बीवी बच्चों की ज़रूरतों के लिए या उनकी बीमारियों के लिए? नहीं, बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जुमा की नमाज़ पढ़ने के लिए, आपका ख़ुत्बा सुनने के लिए, आपकी मस्जिद की फ़ज़ीलत हासिल करने के लिए। कि मस्जिद नुबूवी की फ़ज़ीलत सारी मस्जिदों से ऊंची है सिर्फ़ उस फ़ज़ीलत को हासिल करने के लिए रुके, हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० को ख़्याल हुआ कि जमाअत सुबह को रवाना हुई है मैं जुमे की नमाज़ पढ़कर चला जाऊंगा, मेरी बात ध्यान से सुनो! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें देखकर फ़रमायाः कि अब्दुल्लाह! तुम गए नहीं?! अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मुझे तो यह ख़्याल हुआ कि मुझे यह फ़ज़ीलतें हासिल हों,

आपके पीछे नमाज़ पढ़ने की,

आपका ख़ुत्बा सुनने की,

कि मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में यह फ़ज़ीलत हासिल कर लूं फिर जमाअत में जाकर मिल जाऊंगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः कि ऐ अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० अगर सारी दुनिया का माल तुम ख़ैर की राह में ख़र्च कर दो, तो तुम सुबह निकलने वाली जमाअत की फ़ज़ीलत हासिल नहीं कर सकते। देखो मेरी बात ध्यान से सुनो! अगर हमारा ख़्याल यह है, कि ख़ैर के काम, दुनिया में बहुत से हो रहे हैं, क्या यही काम ज़रूरी है? कि जमाअत ही में निकला जाए, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा, यह बतलाकर, यह ख़्याल साफ़ कर दिया, कि अल्लाह के रास्ते की नक़ल व हरकत का कोई अमल, उसका किसी अमल से मुक़ाबला नहीं हो सकता, कि शबे क़द्र में हिजरे अस्वद और मुलतज़म के सामने कोई सारी रात इबादत करे और कोई एक आदमी कुछ देर के लिए अल्लाह के रास्ते में हो, तो उसकी फ़ज़ीलत उसका दर्जा और उसका मक़ाम, और उसके लिए सवाब, अल्लाह के यहां कहीं ज़्यादा बढ़ा हुआ है।

यहां सब ही माशाअल्लाह पुराने हैं इस मज्मे में, इनसे अर्ज़ कर रहा हूं, कि

उन फ़ज़ाइल को हदीस में देखकर बार–बार बयान किया करो, वरना मज्मूए के अंदर और उम्मत के अंदर से इस रास्ते की नक़ल व हरकत के फ़ज़ाइल ख़त्म होते चले जाएंगे, और फिर यह काम, तंज़िम बन जाएगा, तंज़िम होती है ना तंज़िम! कि यह काम कोई तंज़िम नहीं है जो सहाबा रज़ि० की नक़ल व हरकत के फ़ज़ाइल हैं, वह हमारी नक़ल व हरकत के फ़ज़ाइल है। मौलाना युसूफ़ इसे बार–बार फ़रमाते थे कि काम वही है, जो नबियों का काम था, काम वही है जो सहाबा रज़ि० का काम था। इसलिए सहाबा रज़ि० की नक़ल व हरकत के खूब फ़ज़ाइल बयान करो! अब मैं कैसे अर्ज़ करूं आपसे कि सबसे बड़ी चूक हमसे यह हुई, कि हमने सहाबा रज़ि० की नक़ल व हरकत को महज़ क़िताल पर महमूल करके छोड़ दिया। हालांकि वह जिहाद के फ़ज़ाइल हैं, क़िताल तो एक आरज़ी है, जो कभी पेश न आया। कितने ग़ज़वात ऐसे हैं, जहां से बग़ैर क़िताल किए हुए सहाबा वापस आ गए, क्योंकि हिदायत मतलूब है, हलाकत मतलूब नहीं है। जितने सहाबा के नक़ल व हरकत के फ़ज़ाइल हैं वह तमाम के तमाम, इस रास्ते की नक़ल व हरकत के हैं।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों दोस्तों और अज़ीज़ो! एक बार सहाबा रज़ि० ने यह तैय किया की, कि सिर्फ़ 6 महीने की छुट्टी ले लें।

जिसमें हम मक़ामी काम के साथ अपना कारोबार देख लें,
बीवी बच्चों को देख लें,
टूटे हुए मकान ठीक कर लें,
उजड़े हुए खेत दुरूस्त कर लें,

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः कि अगर तुमने यह इरादा कर लिया है, तो अल्लाह की तरफ़ से आयत नाज़िल हो गई है।

﴿وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ﴾

"कि आपने हाथ अपने को हलाकत में न डालो"

अगर तुमने छः महीने के लिए भी यह तैय कर लिया कि छः महीने तक निकलना नहीं है। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि सहाबा ने छः महीने मदीने में ठहरना,

मुकामी काम के साथ तैय किया था. फ़ौरन अल्लाह ने आयत नाज़िल कर दी कि "अपने हाथ अपने को हलाकत में न डालो।" जैसे ही बाद वालों ने इस आयत का इस्तेमाल, इस काम के अलावा में किया तो फ़ौरन हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० बोल पड़े, कि तुम गलत कहते हो, यह आयत हमारे बारे में नाज़िल हुई है, कि हम अंसार ने एक बार यह सोचा था, कि छः महीने मदीने में क़ियाम कर लें, तो आयत नाज़िल हो गई–

"कि अपने हाथों अपने को हलाकत में न डालो"

हाए!!......हमें इस नक़ल व हरकत का अंदाज़ा नहीं है इसलिए हम सहाबा रज़ि० की नक़ल व हरकत को अपने इस काम की नक़ल व हरकत से कम समझते हैं।

"हयातुस्सहाबा" (हज़रत मौलाना यूसुफ़ रह० ने किताब लिखी है जिसमें सहाबा रज़ि० की ज़िंदगी के बारे में पूरी तफ़्सील से लिखा हुआ है) खूब पढ़ा करो

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों दोस्तों और अज़ीज़ो! "हयातुस्सहाबा" ख़ूब पढ़ा करो, कोई रात ऐसी बाक़ी न रहे जिसमें "हयातुस्सहाबा" न पढ़ी जाए, बशर्तेकि साल लगाया हुआ आलिम हो। आम तौर पर मैं सारे मज्मा से कह रहा हूं जितने जमाअत में जाने वाले और वापस जाने वाले, ये सब यह तैय करें कि "हयातुस्सहाबा" हम में से हर एक के इंफ़िरादी मुताले (खुद पढ़ना) में रहेगी, हमें पता तो चले, हम क्या कर रहे हैं और सहाबा ने क्या किया है? अगर ऐसा न किया तो हमारा रास्ता अलग होगा, उनका रास्ता अलग होगा। यह तो सहाबा किराम रज़ि० खुद डरते थे, कि अगर हमने ऐसा न किया, तो हम पिछलों के रास्ते पर नहीं जा सकते, हम उनसे नहीं मिल सकते। जी हां! इसलिए मेरे बुज़ुर्गों दोस्तों और अज़ीज़ो! इस रास्ते के नक़ल व हरकत के वही फ़ज़ाइल है जो सहाबा रज़ि० के नक़ल व हरकत के फ़ज़ाइल हैं, इस रास्ते की एक सुबह और एक शाम दुनिया और माफ़िहा से बेहतर है। आधा दिन अल्लाह के रास्ते का 500 साल के बराबर है।

कि अल्लाह ने फिरने वालों को, मक़ाम पर बैठने वालों के मुक़ाबले में बड़ी फ़ज़ीलत दी है, वे सारे फ़ज़ाइल उस रास्ते में फिरने वालों के लिए है, जो सहाबा

रज़ि० के लिए थे। अल्लाह के रास्ते में पैदल चलना, सबसे ज़्यादा अल्लाह के गुस्से को ठंडा करने वाला अमल है, क्योंकि इसमें कोई शक नहीं, कि अल्लाह के गज़ब का सबसे बड़ा मज़हर जहन्नम है और यह बात हदीस से साबित है सही रिवायतों से कि अल्लाह के रास्ते का गुबार (धूल–मिट्टी) और जहन्नम की आग यह कभी जमा नहीं हो सकती। अल्लाह के रास्ते में जागना या फेरा देना। खूब समझ लो, ऐसी आंख जहन्नम की आग को देखेगी नहीं जो अल्लाह के रास्ते में जागी हो।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों दोस्तों और अज़ीज़ो! हाए!!.....मैं कैसे अर्ज करूं....जितने भी यहां बैठे हुए हैं, जो इस वक़्त नहीं जा रहे हैं जमाअत में, वे सोच रहे होंगे, कि भाई ठीक है अल्लाह के रास्ते में निकलना चाहिए, पर अभी हमारा मौक़ा नहीं है जाने का। हाए!!.......हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० आधे दिन पीछे रह गए, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कि 500 साल पीछे रह गए हो। जो अभी नहीं जा रहे हैं, वे अब ज़रा बैठकर सोचें, उन्हें अंदाज़ा नहीं है, कि यह काम कितनी तेज़ रफ़्तारी से अल्लाह के क़रीब होने को है। मौलाना इलयास साहब रह० फ़रमाते थे कि इस काम से बढ़कर अल्लाह के क़रीब होने का, तेज़ रफ़्तारी का कोई अमल नहीं है। यह जज़्बात हमारे अल्लाह के रास्ते में निकलने के है और जहां तक हो सके पैदल चलियो, जितने अल्लाह के रास्ते में निकल रहे हैं, और वे जो इस वक़्त नहीं जा रहे हैं वापस घरों को जा रहे हैं और आस–पास के इलाक़ों से आए हुए लोग भी, उन सबसे मेरी दरख़्वास्त है कि यहां से पैदल काम करते हुए जाओ!

तालीम का,
गश्त का,
नमाज़ों का,
ज़िक्र का,
तिलावत का,
घर–घर मुलाक़ातों का,
दावत का,

माहौल क़ायम करते हुए जाओ और जितने लोग यहां से अल्लाह के रास्ते में निकल रहे हैं, इस सूबे में या सूबे से बाहर अगर यहां से दुनिया की बातें करते

हुए गए, तो वे सारे अनवारात ज़ाया करके जाओगे, जो यहां तीन दिन के माहौल में हासिल हुए हैं आपस में यही बात करते हुए जाओ जो बातें यहां अर्ज़ की गई हैं, आमाल करते हुए जाओ जो अल्लाह के रास्ते में निकलने वाले हैं, वह अपनी जमाअत में मुज्तमआ होकर चलें, अमीर की इताअत के साथ चलें, ट्रेन में या बस में, जिस गाड़ी में सफ़र करें, सफ़र में हर एक को दावत दें, हर एक से मुलाक़ात करें, यह न देखेंगे कि हमारी जमाअत का आदमी है, या कौन है?

सबसे बड़ी दावत और हिक्मत इकराम है।

देखो मेरे दोस्तों और अज़ीज़ो! हर एक को सलाम करो, हर एक को दावत दो वरना हदीस में आता है, कि जान–पहचान की वजह से सलाम करना, क़ियामत की निशानियों में से है लोग सलाम करते हैं ना! वे भी उन्हें सलाम करते हैं, जिनसे जान–पहचान है, वरना कितने मुसलमानों से इनका सुबह–शाम मिलना होता है, पर कोई सलाम का एहतिमाम नहीं करता, इसलिए हर एक को सलाम करो, हर एक को दावत दो, दावत अल्लाह की तरफ़ है! और देखो! सबसे बड़ी दावत और हिक्मत इकराम है। तुम ट्रेन में बैठोगे, या बस में बैठोगे, अमीर साहब कहेंगे जाओ, दस आदमी की जमाअत है दस चाय ले आओ, तौबा.......तौबा......यह बख़ीलों की जमाअत है। हज़रत रह० फ़रमाते थे तुम्हारी नक़ल व हरकत इस्लाम को फैलाने के लिए है, इस्लाम, इकराम से फैला है, ख़ूब ख़र्च करो, तुमसे कहेंगे यह तश्कील वाले कि हां, तुम्हारा रूख़ हमने फलां इलाक़े का बना दिया है, यहां से तुम्हारी जमाअत फ़लां जगह जाएगी, 500 रूपये काफ़ी है तुम्हारे ख़र्च के लिए। नहीं बल्कि इनसे कहो! हम अल्लाह के रास्ते में निकल रहे हैं, ज़्यादा लेकर जाएंगे। सबका इकराम करेंगे, खिलाएंगे–पिलाएंगे। वह तो हज़रत रह० फ़रमाते थे, कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग़ैर को भी इस्लाम की तरफ़ राग़िब किया है, अपनी ज़ात से ख़ूब ख़र्च करके किया है। भरी हुई वादी बकरियों की एक मुश्रिक को दे दी कि वह आंखें घुमा–घुमाकर देख रहा था, वादी जो बकरियों से भरी हुई थी। वह वहीं इस्लाम में दाख़िल हुए, लेकिन मज़ेदार बात यह थी कि जैसे ही वह इस्लाम में दाख़िल होते थे, उसके साथ–साथ दिल में माल की नफ़रत भी दाख़िल हो जाती थी।

इसलिए मैं अर्ज़ कर रहा था, कि अल्लाह के रास्ते में शौक़ से ख़र्च किया

करो। दूसरों पर ख़र्च करना, ख़ुद एक अमल है, अल्लाह के रास्ते में ख़ूब खर्च किया करो, अमीर साहब से कहो, आप सबके लिए चाय मंगा लो, सबके लिए बिस्किट मंगा लो, पैसे मैं देता हूं। ग़ैर बैठे हुए होंगे ट्रेनों, में बसों में, इनका भी इकराम करो, इनसे भी मुलाक़ात करो, आपस में ख़ूब अल्लाह की बड़ाई को बोलो, वे भी सुन रहे होंगे, अल्लाह की अज़मत को, उसकी क़ुदरत को, अल्लाह का तारूफ़ उन्हें भी कराओ।

देखों मेरे दोस्तों और अज़ीज़ों! बात साफ़–साफ़ यह है, कि हम तो अल्लाह की तरफ़ बुला रहे हैं, हमारा बुलाना किसी ख़ास तरीक़े की तरफ़, किसी ख़ास जमाअत की तरफ़, या किसी की ज़ात की तरफ़ बुलाना नहीं है, न ही हमें लोगों को तब्लीग़ी जमाअत में दाख़िल होने की दावत देनी है, बल्कि हम तो अल्लाह की तरफ़ बुला रहे हैं, बस यह ही उम्मत के बनने का रास्ता है, कि तुम उम्मती बनकर दावत दो।

"जमाअत" ख़ुद तफ़रीक़ (इंतिशार) का लफ़्ज़ है

हज़रत मौलाना इलयास साहब रह० फ़रमाते थे, "कि जमाअत" ख़ुद "तफ़रीक़" का लफ़्ज़ है, अगर हम लोगों से कहे कि हमारी जमाअत में आ जाओ, तो यह कहकर हमने मुक़ाबला खड़ा कर दिया हम जमाअत बन गए। देखो! जमाअत से जमाअत बनती है, फ़िरके से फ़िरके बनते हैं। उम्मत का सबसे बड़ा नुक़सान यही है, जमाअत से जमाअत बनाई जाए और फ़िरके से फ़िरके बनाए जाए। बल्कि हम तो बुला रहे हैं अल्लाह की तरफ़, इसलिए हर एक को दावत दो, हम किसी फ़िरके किसी जमाअत, किसी ग्रुप की तरफ़ नहीं बुला रहे हैं।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! ट्रेनों में, बसों में, बैठे हुए लोगों को दावत देते हुए जाओ, मुलाक़ाते करते हुए जाओ, जिसको दावत दो, उसे भी दावत देने वाला बनाकर छोड़ो कि देखिये भाई! आपसे हमारी बात हो रही है, माशाअल्लाह आपने इरादा कर लिया है, अब आप भी दूसरों तक यह बात पहुंचा देना। जिससे दीन की बात करो, उसे दावत देने वाला बनाकर छोड़ो।

इस तरह हमें इनशाअल्लाह दावत देते हुए, इबादत करते हुए चलना है, अगर ट्रेन में बैठे हुए हो तो तालीम का हल्क़ा ट्रेन में न करो, तालीम के हल्क़े में यकसूई

होनी चाहिए। ट्रेन में साथी अलग–अलग जगह बैठे हैं, इधर–उधर, वहां तालीम का हल्का मुश्किल है। मेरी बात याद रखो! तालीम के लिए किताब हर साथी के पास अपनी अलग–अलग किताब होनी ज़रूरी है। दस आदमी हैं जमाअत में, दस के दस साथी की किताब अलग–अलग होनी चाहिए। यह नहीं है कि एक किताब सारी जमाअत के पास हो, बल्कि हर एक अपनी किताब ख़रीद ले, जब किताब लेकर बैठेगा, बस में या ट्रेन में, तो बराबर में कोई आदमी आकर बैठेगा, उससे नाम पूछो, तो उसे सलाम करो, कि भाई देखो! मेरे पास एक किताब है, मगर मैं पढ़ा नहीं हूं आप ज़रा पढ़कर सुना दीजिए, कि इसमें क्या लिखा हुआ है? हो गई तालीम, वह खुद भी सुनेगा, इसके लिए तब्लीग़ हो रही है, इसके लिए भी तालीम हो रही है, वह भी पढ़ रहा है, कोई कहेगा "अल्लाहु अक्बर" हमें तो खबर नहीं थी कि इस किताब में यह लिखा हुआ है। नमाज़ छोड़ने पर यह अज़ाब है, नमाज़ पढ़ने पर यह सवाब है। इस तरह ट्रेन में, बस में, हर एक के पास अपनी–अपनी अलग–अलग किताब होनी ज़रूरी है, ताकि अकेले में इसको पढ़ सकें।

"जमाअत" दिए हुए रुख़ पर पहुंचकर क्या करे

जहां का हमारा रुख़ बना है हमारे साथी इकट्ठे होकर ट्रेन, बस या जो भी सवारी हो, उससे उतरकर अपना सामान खुद उठाए और अपना सामान देख लें, अपने साथियों को भी देख लें कि सारे साथी हैं, या नहीं, फिर बस्ती में दाख़िल होने से पहले दुआ मांग लें। मसनून दुआ है, इसको याद कर लें, अल्लाह से उस बस्ती वालों की मुहब्बत भी मांग लें, और उस बस्ती की ख़ैर को भी मांग लें। अंबिया अलैहिस्सलाम दोनों की मुहब्बत अल्लाह से मांगते थे कि ऐ अल्लाह! उनकी मुहब्बत हमारे दिलों में और हमारी मुहब्बत उनके दिलों में डाल दे क्योंकि वे बात सुनेंगे नहीं, जब तक कि मुहब्बत नहीं होगी, इस तरह दुआ मांगकर बस्ती में दाख़िल हों।

हमारी शुरूआत मस्जिद से होगी, सबसे पहले जमाअत, मस्जिद में पहुंचे, यह न हो, कि बाज़ार से गुज़र रहे हैं क्यों न सामान ख़रीदते हुए चलें, कि चावल की ज़रूरत पढ़ेगी ही, यहीं से ले लें। नहीं देखो! सबसे पहले मस्जिद की तरफ़ जाओ, जिस चीज़ पर तुम क़दम रखोगे, वही तुम्हारा मक़सद है, अगर खाने–पीने में सबसे पहले लग गए, तो यही मक़सद बन जाएगा। सबसे पहले मस्जिद में जाओ, सुन्नत

तरीक़े से मस्जिद में दाख़िल हो, सामान एक तरफ़ हो कुरैने (सलीक़े) से लगा दो। मस्जिद में सामान न बिखेरना, स्टोप या कोई बदबूदार चीज़ मस्जिद में न रखना। मस्जिद में लहसन, प्यास वग़ैरह खाकर न जाओ। हदीस में आता है कि जो प्याज़ लहसन खाए वह हमारी मस्जिद के क़रीब न आए, इसलिए सामान अपना मस्जिद के बाहर के हिस्से में रखो, ऐसे कुरैने (सलीक़े) से रखो, कि आने वाले लोगों को तक्लीफ़ न हो। मस्जिद का एहतिराम करो, मकरूह वक़्त न हो तो दो–दो रकआत "तहीयातुल मस्जिद" पढ़ लो, कि मस्जिद में दाख़िल होकर अल्लाह के घर में दाख़िल होने का मुंह बना लो। फिर सबको मश्विरे की तरफ़ मुतावज्जोह करो, अगर मक़ामी साथी मश्विरे में हो, तो अच्छी बात है, वह न हो, तो उनका इंतिज़ार न करो, अपना मश्विरा कर लो। 24 घंटे का नज़्म बना लो कि हमें यहां काम किस तरह करना है, मक़ामी लोगों को साथ ले लो उनसे पूछो यहां वक़्त लगाए हुए साथी कितने हैं? मुलाक़ातों का कौन–सा वक़्त मुनासिब है। मुक़ामी से इसका मश्विरा करो, घर–घर की मुलाक़ातों का नज़्म बना लो, हमें सबसे ज़्यादा उमूमी गश्त को, उमूमी काम को, आगे रखना होगा, थोड़ी–सी मुलाक़ातें, यह भी एक ज़रूरी काम है। कि यहां उलमा है यहां मालदार क़िस्म के बड़े लोग हैं, उनकी मुलाक़ात के लिए भी जाना है मालदारों के माल से अगर मुतासिर होकर दावत दी वह तुम्हारी बात से हरगिज़ मुतासिर न होंगे, जितना असर उनकी दुनिया का तुम्हारे दिलों पर होगा, उतनी ही हिकारत से वह तुम्हारे दीन की बात को सुनेंगे और जितनी नफ़रत तुम्हारे दिल में दुनिया की होगी उतनी ही मुहब्बत से वह तुम्हारी बात को सुनेंगे मगर उनकी चीज़ को बुरा मत कहना, उनकी चीज़ों की नफ़रत दिल में तो हो, पर ज़ुबान तक न आए।

याद रखो अगर तुम्हारे दिलों में उनकी चीज़ों की मुहब्बत हो, तो तुम यह बात उनके सामने कह नहीं सकोगे, तुम्हारी ज़ुबान नहीं उठेगी, क्योंकि तुम मदहू की दुनिया से मुतासिर होकर दावत दे रहे हो, इस तरह हमें दोस्तो! हर एक से मुलाक़ात करनी है। उमूमी गश्त में एक–एक के पास जाओ, मस्जिद के लिए नक़द निकालकर मस्जिद के माहौल में ले आओ। यहां लाकर तैयार करो, चार–चार महीने की तश्कील करो, जो तैयार हो जाए उनसे कहो कि आप तैयारी करके

यहां आ जाएं. देखो! उन्हें छोड़ न देना, वरना यह हाथ नहीं आने के। इसलिए उन्हें फिर वसूल करना है. उसके लिए हमें वसूली गश्त भी करना है। मैं तालीमी गश्त बता चुका हूं, कि वह तालीम के दर्मियान होगा, इस तरह हमें पांच तरह के गश्त करना है. तालीमी गश्त, उमूमी गश्त, खसूसी गश्त, तश्कीली गश्त, वसूली गश्त। वसूली गश्त में उन्हें वसूल करके लाना है यहां उनको वसूल करके लाना है *मस्जिद के माहौल में लाना ही असल है।*

देखो मैंने शुरू ही में अर्ज़ किया था कि मस्जिद के माहौल में लाने ही असल है। इस तरह दावत देकर हर जगह से नक़द जमाअतें बनाकर अल्लाह के रास्ते में निकालनी है। जहां से जमाअत बनाओ, चार–चार महीने की, चिल्ले की, वहीं के मक़ामी वक़्त लगाए साथियों के मशिवरे से उनका ज़िम्मेदार बना दो और हर जगह से नक़द जमाअतें निकालना है हर मस्जिद में जब तक 5 काम उस मस्जिद का गश्त, मस्जिद की तालीम और घर की तालीम, तीन दिन की जमाअत का निकालना और मस्जिद का मशिवरा कम से कम ढाई घंटा मस्जिद में फ़ारिग़ करके मस्जिद की आबादी की मेहनत, यह जब तक शुरू न हो जाए उस वक़्त तक कोई जमाअत उस मस्जिद से आगे न बढ़े। देखो मेरी बात नोट कर लो! असल में हमारी जमाअतें इलाक़ों का सरवे करके आ जाती हैं। फिरना असल नहीं है, हर मस्जिद में 5 काम क़ायम करते हुए जमाअत को आगे ले जाओ, जमाअत की नक़ल व हरकत से तो हर इलाक़े का माहौल बदलना है, जहां आप यह देखेंगे कि आमाल ज़िंदा हो गए, तो अब वहां से आगे बढ़ जाओ। चाहे आपको इस इलाके में ही 4 महीने लगाने पड़ जाएं, चाहे एक इलाके में चिल्ला लगाना पड़ जाए। मेरे नज़दीक़ जमाअत को अपनी जगह से आगे बढ़ना उस वक़्त तक मुनासिब नहीं है जब तक वहां काम नज़र न आने लगे। इसी तरह करेंगे इनशाअल्लाह! कि इस तरह हमें हर जगह से नक़द जमाअतें निकालनी है।

यहां यह सारा जितना मज्मा इस वक़्त जमा है। यह तैय करके जाएं, कि हम इनशाअल्लाह इस काम को मक़सद बनाकर करेंगे। इस तरह इनशाअल्लाह हम को दावत देते हुए चलना है, हर जगह से नक़द जमाअतें निकालनी है। और यह जितना मज्मा है, यह तो सारा यह तैय करके जाए कि इनशाअल्लाह किसी हालत

में नमाज़ नहीं छोड़ेंगे। देखो मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! मुसलमान से यह कहना कि नमाज़ नहीं छोड़ोगे बड़ी गैरत की बात है। बड़ी शर्म की बात है कि मुसलमान से कहना कि नमाज़ न छोड़ना। इसका तो कोई तसव्वुर ही नहीं कर सकता कि मुसलमान नमाज़ छोड़ दे, कि मुसलमान कुफ़्र करे, यह तो हो ही नहीं सकता, मुसलमान शराबी हो सकता, मुसलमान ज़ीना कर लें, यह हो सकता है, मुसलमान जुआ खेल ले, यह हो सकता है, मुसलमान सूद खा ले यह भी हो सकता है लेकिन मुसलमान नमाज़ छोड़ दे? इसका तो कोई तसव्वुर ही नहीं कर सकता, पिछले ज़माने में मुसलमान की पहचान नाम से या उसकी नसल से नहीं होती थी बल्कि मुसलमान की पहचान जो होती थी वह नमाज़ से होती थी कि वह नमाज़ी है यानी मुसलमान है।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! यह पूरा मज्मा तैय कर ले कि इनशाअल्लाह किसी हालत में नमाज़ नहीं छोड़ेंगे। अब दुआ का वक़्त है सारा मज्मा अल्लाह की तरफ़ मुतावज्जोह हो जाए, कोई उज़्र न हो तो ऐसे बैठते जैसे "अत्ताहियात" में बैठे हैं सारा मज्मा इस तरह बैठ जाए जिस तरह "अत्ताहियात" में बैठे हैं। अल्लाह की तरफ़ पूरी तरह मुतावज्जोह होकर सारी उम्मत के लिए और सारी इंसानियत के लिए अल्लाह से मांगना है।

ईमान की तक़्वीयत (मज़बूती) के चार सबब

क़ुदरत

﴿وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ وَالْاَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है : कि अल्लाह तआला से इसके वही बंदे डरते हैं, जो उसकी क़ुदरत का इल्म रखते हैं। (अल–फ़ातिर : 28)

﴿قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है : कि ऐ नबी! आप उनसे पूछिए, कि ज़रा यह तो बताओ! कि अगर अल्लाह तआला तुम पर हमेशा क़ियामत के दिन तक रात ही रहने दें, तो अल्लाह के सिवा कौन सा माबूद है, जो तुम्हारे लिए रोशनी ले आए क्या तुम लोग सुनते नहीं हो? आप उनसे यह भी पूछिए, कि यह बताओ अगर अल्लाह तआला तुम पर हमेशा क़ियामत के दिन तक दिन ही रहने दें तो अल्लाह तआला के सिवा कौन सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रात ले आए? ताकि उसमें आराम करो, क्या तुम देखते नहीं?!! (सूरः क़सस, 63–64)

क़ुदरत चार चीज़ों के मज्मे को कहते हैं।

1. जब चाहे।
2. जहां चाहे।
3. जैसे चाहे।
4. जो चाहे।

जिसके अंदर ये चारों सिफ़ात मौजूद हो, वह क़ुदरत वाला कहलाने का हक़दार है और उसी को क़ुदरत वाला कहा जाएगा। जब इस बात पर ग़ौर किया जाएगा, तो पता यह चलेगा कि ये चारों सिफ़ात सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात के साथ ही वाबस्ता है। इसलिए हमें सबसे पहले इस बात को समझना है, कि–

1. कुदरत वाला कौन है?

2. किसके अंदर ये चारों सिफ़ात हैं?

3. कौन हर चीज़ के करने पर क़ादिर है?

4. किसने ऐसा करके दिखाया है और कौन ऐसा कर सकता है?

तो पता यह चलेगा कि हर चीज़ के करने पर सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात ही क़ादिर है। यह बात नीचे लिखे जा रहे चंद वाक़िआत से समझ में आती है, कि अल्लाह तआला ने—

बग़ैर मां और बाप के हज़रत आदम अलै० को बना दिया।

बग़ैर मां की कोख के हज़रत हव्वा अलै० को बना दिया।

बग़ैर ज़मीन के सात ज़मीनों को बना दिया।

बग़ैर सूरज के सूरज और बग़ैर चांद के चांद बना दिया।

बग़ैर तारों के तारे बना दिए।

इसी तरह ज़मीन पर शुरूआत के वक़्त यानी पहली बार: बग़ैर अंडों के परिंदों को बना दिया।

बग़ैर जानवर के इस ज़मीन पर जानवर बना दिया। हमें अपनी पहचान कराने के लिए अपनी मुआरफ़त (अल्लाह की कुदरत) देने के लिए, अब जानवरों के पेट में जानवरों को और अंडे के अंदर परिंदे बनाकर दिखाते हैं पर ईमान न सीखने की वजह से लोगों का यक़ीन बन गया कि चीज़ों से निकलने वाली चीज़ें, चीज़ों से बनती हैं। जबकि अल्लाह तआला ने खुद यह बात साफ़ कर दी है कि किसी मख़्लूक़ में किसी चीज़ को बनाने की कुदरत नहीं है।

﴿وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: कि इंसान जिन चीज़ों को अल्लाह के सिवा पुकारता है, यह सब मिलकर भी कोई चीज़ नहीं बना सकते हैं, बल्कि इन सबको खुद अल्लाह तआला ही ने बनाया है। (सूरः नह्ल)

﴿قُلْ مَنْ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ
سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ قُلْ فَاَنّٰى تُسْحَرُوْنَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: ऐ नबी! आप इनसे पूछिए कि ऐसा कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ का तसरूफ़ व इख़्तियार है और वह पनाह देने वाला है? अगर तुम (लोग) जानते हो तो, बताओ? तो (ज़ुबान से) यहीं कहेंगे, कि अल्लाह है। तो आप उनसे कहिए कि फिर (अल्लाह के ग़ैर के) क्यों दीवाने बने फिर रहे हो। (सूरः मोमिन, 88-89)

इस बात को बतलाने के लिए और समझाने के लिए कुरआन ने वाक़िआत बयान किए हैं, कि हज़रत सालेह अलै० की क़ौम के लिए पहाड़ से ऊंटनी निकाल दी।

हज़रत मूसा अलै० के हाथ के अंगूठे से दूध और शहद निकाल दिया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत ईसा अलै० के लिए पका हुआ खाना बर्तन के साथ आसमान से उतार दिया।

कुंवारी मरयम की कोक से ईसा अलै० को पैदा कर दिया।

बनी इसराइल के लिए 40 चालीस साल तक के लिए हलवा और बटेर उतार कर खिला दिया।

उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए आसमान से रस्सी से बंधा पानी से भरा हुआ धोल उतार दिया।

हज़रत खुबैब रज़ि० के लिए बंद कमरे में आसमान से अंगूर का खोशा उतार दिया।

जिस तरह मरयम के लिए उनके कमरे में आसमान से फल उतारा करते थे।

मेरे दोस्तो! यह सारा का सारा निज़ाम अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से चलाया है और अल्लाह की यह कुदरत अल्लाह की ज़ात में है, कि कायनात की किसी भी शक्ल में चाहे वह शक्ल

चीटीं की हो या जिब्रील की,
ज़मीन की हो या आसमान की,
ज़र्रा की हो या पहाड़ की,
क़तरे की हो या समुंद्र की,

यानी अर्श से लेकर फ़र्श (ज़मीन) के दर्मियान की शक्ल में अल्लाह की क़ुदरत नहीं है, अल्लाह की क़ुदरत सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात में है।

हां! ये सारी शक्लें बनी तो हैं, उनकी क़ुदरत से लेकिन किसी शक्ल में कुछ बनाने और कुछ करने की क़ुदरत नहीं है, क़ुदरत तो अल्लाह की ज़ात में है।

सूरज में रोशनी बनाने की क़ुदरत नहीं है, वरना क़ियामत के दिन सूरज बे-नूर क्यों हो जाएगा?

खेत में ग़ल्ला और सब्ज़ी बनाने की क़ुदरत नहीं है, वरना ज़मीनें बंजर क्यों पड़ी रहती?!

पेड़ों में फल और मेवे बनाने की क़ुदरत नहीं है, वरना हमेशा फल क्यों नहीं देते?!

बादलों में पानी बनाने की क़ुदरत नहीं है। वरना हर बादल पानी बरसाता?

जानवरों और औरतों में दूध बनाने की क़ुदरत नहीं है वरना हर औरत और जानवर से हमेशा दूध आता?!

शहद की मक्खी में शहद बनाने की क़ुदरत नहीं है, वरना हर छत्ते से हमेशा शहद निकलता?!

पहाड़ों के अंदर सोना, चांदी बनाने की क़ुदरत नहीं है वरना हर पहाड़ से सोना, चांदी निकलता?!

ज़मीनों में कोयला, सीसा, तांबा, पीतल, लोहा, पैट्रोल, गैस और पानी बनाने की क़ुदरत नहीं है, वरना हर जगह की ज़मीन से ये चीज़ें निकलती?!

ये जो कुछ इन शक्लों के अंदर से निकलकर हमें मिल रहा है। जैसे–

जानवरों की शक्लों से दूध,
पेड़ों की शक्लों से ग़ल्ला और सब्ज़ियां,
शहद की मक्खियों के छत्ते से शहद,
बादल की शक्ल से पानी और,
सूरज की शक्ल से रोशनी वग़ैरह,

ये सारी चीज़ें आसमानों में मौजूद, अल्लाह के ग़ैबी ख़ज़ानों से, फ़रिश्तों के ज़रिए उन शक्लों में भेजी जा रही हैं, जो हमें आते हुए नज़र तो नहीं आते, पर

निकलते हुए नज़र आ रहे हैं।

यह बात नीचे लिखी हुई कुरआन की आयतों और हदीसों से समझी जा सकती है।

﴿وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ۝ فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنْطِقُونَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: कि तुम्हारी रोज़ी और जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है, वह सारे आसमान में है। तो आसमानों और ज़मीनों के मालिक की क़सम! यह बात उसी तरह यक़ीन के क़ाबिल है, जिस तरह तुम्हारा एक–दूसरे से बात करना यक़ीनी है। (सूरः ज़ारियात, 22–23)

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: लोगो! अल्लाह तआला के उन एहसानात को याद करो, जो अल्लाह तआला ने तुम पर किए हैं, ज़रा सोचो तो सही, कि अल्लाह तआला के अलावा कोई और है?! जिसने तुम्हें बनाया हो और जो तुम्हें आसमान व ज़मीन से रोज़ी पहुंचाता हो?! सच्ची बात यह है कि अल्लाह तआला के अलावा कोई और ज़रूरतों को पूरा करने वाला है ही नहीं, फिर अल्लाह तआला को छोड़कर किस पर भरोसा कर रहे हो। (सूरः फ़ातिर, 3)

﴿وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَعْلُومٍ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: कि हमारे पास हर चीज़ के ख़ज़ाने भरे पड़े हैं, लेकिन हम हिक्मत के तहत हर चीज़ को तैयशुदा मिक़्दार से (आसमानों के ऊपर से) उतारते रहते हैं। (सूरः हिजर, 29)

﴿أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ۝ أَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُونَ ۝ لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: अच्छा फिर यह बताओ! कि जो पानी तुम पीते

हो, उसको बादलों से तुमने बरसाया या हम इसको बरसाने वाले हैं? अगर हम चाहें तो इस पानी को कड़वा कर दें, इस पर तुम शुक्र क्यों नहीं करते?!!!

(सूरः वाकिआ, 69–70)

﴿وَهُوَ الَّذِيْ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجْنَا بِهِ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: और वह ही अल्लाह तआला जिन्होंने आसमान से पानी उतारा।

(सूरः अनआम, 99)

﴿وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْحُبُكِ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: आसमान की क़सम! जिसमें रास्ते हैं।

(सूरः ज़रियात)

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ज़ुबैर! अल्लाह तआला ने जब अपने अर्श पर जलवा फ़रमाया, तो अपने बंदों की तरफ़ (करम की) नज़र डाली और इर्शाद फ़रमाया कि मेरे बंदों तुम मेरी मख़्लूक़ हो और मैं तुम्हारा परवरदिगार (ज़रूरत को पूरा करने वाला) हूं। तुम्हारी रोज़ियां हमारे क़ब्ज़े में हैं लिहाज़ा तुम अपने आपको ऐसी मेहनतों में न फंसाओ, जिसका ज़िम्मा मैंने ले रखा है। तुम लोग अपनी रोज़ियां मुझसे मांगो! क्योंकि रिज़्क़ का दरवाज़ा तो सातवें आसमान पर खुला हुआ है, जो ख़ज़ाना अर्श से मिला हुआ है, उसका दरवाज़ा न रात में बंद होता है, न दिन में। अल्लाह तआला इस दरवाज़े से हर शख़्स पर रोज़ी उतारता रहता है। लोगों के गुमान के बक़द्र उनके अता के बक़द्र, उनके सदक़े के बक़द्र और उनके ख़र्च के बक़द्र। जो शख़्स कम ख़र्च करता है उसके लिए कम उतारा जाता है और जो शख़्स ज़्यादा ख़र्च करता है उसके लिए ज़्यादा उतारा जाता है। (दुर्रे मंसूर)

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इर्शाद फ़रमाया: इंसान तक उसकी रोज़ी पहुंचाने के लिए फ़रिश्ते पहले से तैय हैं अल्लाह तआला ने उनको हुक्म फ़रमा रखा है, कि जिस आदमी को तुम इस हालत में पाओ, जिसने (इस्लाम) को ही अपना ओढ़ना–बिछौना बना रखा है तो तुम उसको आसमानों और ज़मीन से रिज़्क़ पहुंचाओ और दीगर इंसानों को भी

रोज़ी पहुचा दो। वह दीगर लोग अपने मुक़द्दर से ज़्यादा रोज़ी न पा सकेंगे।

(अबू अवाना)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः अल्लाह की मख़्लूक़ में फ़रिश्तों से ज़्यादा कोई मख़्लूक़ नहीं है और ज़मीन पर कोई भी ऐसी चीज़ नहीं उगती जिसके साथ एक मुवक्कील फ़रिश्ता न हो। (अबू शैख़, हदीस न० 327)

हज़रत हकम बिन उवैबा रज़ि० फ़रमाते हैं, कि बारिश के साथ आदम की औलाद और इब्लीस की औलाद से ज़्यादा फ़रिश्ते उतरते हैं जो हर क़तरे की शुमार करते हैं कि वह पानी का क़तरा कहां गिरेगा और उस फल से किसे रिज़्क़ दिया जाएगा। (अबू शैख़, 493)

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने पानी के ख़ज़ाने पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है। इस फ़रिश्ते के हाथ में एक पैमाना है, इस पैमाने से गुज़र कर ही पानी की हर बूंद ज़मीन पर आती है लेकिन हज़रत नूह अलै० के तूफ़ान वाले दिन ऐसा न हुआ, बल्कि अल्लाह ने सीधे पानी को हुक्म दिया और पानी को संभालने वाले फ़रिश्तों को हुक्म न दिया, जिस पर वे फ़रिश्ते पानी को रोकते रह गए, लेकिन पानी न रुका। (कंज़ुल उम्माल, 273)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि (एक मर्तबा हम लोगों पर) बादल ने साया किया, तो हमने उससे (बारिश की) उम्मीद की, जिस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जो फ़रिश्ता बादलों को चलाता है, वह अभी हाज़िर हुआ था, उसने मुझे सलाम किया और बतलाया कि वह उस बादल को यमन की वादी की तरफ़ ले जा रहा है, जहां "ज़रा" नाम की जगह पर उसका पानी बरसेगा।

(अबू अवाना)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः कि हर आसमान पर हर इंसान के लिए दो दरवाज़े हैं एक दरवाज़े से उसके आमाल ऊपर जाते हैं और दूसरे दरवाज़े से उसकी रोज़ी उतरती है। (किताबुल जनाइज़)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः कि इंसानों तक रोज़ी पहुचाने के लिए अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों